समाज का अभिशाप

(ग्रामीण साहित्य माला पुष्प - 4)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

समाज का अभिशाप

लेखक
ब्रह्म प्रकाश गुप्त

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

प्रथम संस्करण 1978

द्वितीय संस्करण 1982

तृतीया संस्करण 1987

मूल्य : 2.50 रुपये

पुस्तक शृंखला संख्या : 121

मुद्रक
शर्मा आफसेट प्रेस,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6.

भूमिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से ग्रामीण बहिन-भाइयों को ग्रामीण साहित्य माला का चतुर्थ पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना-पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य-उत्पादन पर विचार विमर्श करने के लिए हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्घाटन हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया उनमें से कुछ ये हैं :

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरिवंश राय बच्चन, प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघुवीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उनके जीवन से, उनकी समस्याओं से, उनके परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के आभारी हैं कि उन्होंने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ-बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भाग-दौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली.
2 अक्टूबर 1978

समाज का अभिशाप

[एक टूटे मकान का दृश्य । एक सत्रह साल की लड़की तुलसी चौरे का फेरा लगा रही है । वह कमरे के सामने आकर नमस्कार करती है । उसने एक दिया भी जला रखा है । इसका नाम सुमित्रा है । वह धीरे से बुदबुदाती है]

सुमित्रा : भगवान—मेरे घर को सुखी रखना । मेरे मां-बाप ने बहुत दुःख झेला है । बहुत दिनों के बाद यह सुख तुमने दिखलाया भगवान—इसे मत छीन लेना. [नमस्कार कर के चली जाती है]

\+ + + +

[गोबरधन, सुमित्रा का बाप, रस्सियां बुन रहा है । पास ही उसकी मां अनाज बीन रही है]

गोबरधन : [कुछ गाने लगता है]

कमली : [मुस्कराकर] आजकल तुम्हारे गाने की बहुत धूम है । मंझली कह रही थी कल रात खूब कीर्तन गाया गया ।

गोबरधन : क्यों, नहीं गाना चाहिए ?

कमली : क्यों नहीं, भगवान ने मुँह किस लिए दिया है ? फिर गाने का मौका भी तो हमेशा नहीं मिला करता। बहुत दिनों तक रो लिया हमने।

गोबरधन : तुम ठीक कहती हो कम्मो ! आज भी विश्वास नहीं होता, जैसी मेरे पास जमीन है मेरे सारे कर्ज कभी चुक न पाते और मैं ठाकुर की गुलामी से आजाद भी न हो पाता।

कमली : सोकी एक बात, मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं।

\+ + + +

आवाज : गोबरधन घर में हो ?

[दरवाजे पर हरिया खड़ा होता है उसकी आवाज सुनकर कमली घूंघट निकाल लेती है]

गोबरधन : लगता है हरिया है। तू घूंघट क्यों कर रही है। तेरा देवर लगा...। आओ भाई...।

कमली : धत्त तेरी के...। तुम थे देवर जी...। मैं तो आवाज भी नहीं पहचान सकी। गले में कुछ हो गया है क्या ?

हरिया : मत पूछो भौजी...गले में क्या-क्या नहीं हुआ। रोज-रोज ग्राम सेवक के साथ चिल्लाना पड़ता है।

गोबरधन : अब तुम एक काम करो हरिया। हमारे लीडर बन जाओ।

कमली : बनेगा क्या ? हमारा लीडर तो यही है। इस बेचारे ने भी हमें जमीन दिलवाने में काफी दौड़-धूप की।

हरिया : क्या करता भौजी...हमारी जमीन...देखते - देखते इन धोखेबाजों ने हड़प ली। बाप-दादा की आत्मा तड़पती चली गयी भौजी... इन बेईमानों ने कितना अन्याय किया...। क्यों भैया...?

कमली : अरे इनसे क्या पूछते हो ? मौन भाव न जाने पेट भरे से काम...। ये कहो कि जब से सरकार ने गाँवों के उद्धार की नई नीति अपनाई है तब से हमारी मस्सी जमीन वापस मिल गयी...नहीं तो हमारी सारी उम्र ही गुलामी में कटती...।

हाँ तुम बताओ और क्या हाल हैं ?

हरिया : तुम रस्सी किस लिए बट रहे हो ?

गोबरधन : अरे वो जो जमीन मिली है न...उस में मक्का अच्छी होती है। सोचता हूँ सिंचाई की सुविधा है तो लट्ठे से पानी-वानी का इन्तजाम कर लूँ...। सुना है रामकिसुन को भी जमीन मिल गयी...।

हरिया : वही तो कहने आया था...। आज शाम को हमने रामकिसुन के घर एक मीटिंग रखी है ..उसमें तुम्हें भी आना होगा।

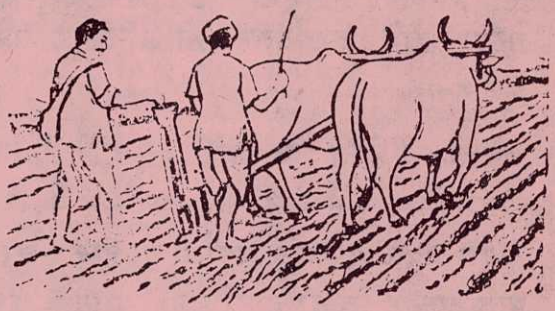

गोबरधन : देख भाई...हमें इससे कुछ मतलब नहीं। तुम लोगों की कृपा से मेरी जमीन मुझे मिल गयी है। अब मेहनत करूँगा...बाल-बच्चों की पढ़ाई-लिखाई...।

हरिया : भइया...असल में शहर से कुछ लोग ये जानने आये हैं कि हमें जमीन वापस की गयी है या नहीं ?

गोबरधन : मेरी तरफ से तुम उन सबको राम राम कह देना बस...। मैं नहीं आता...।

हरिया : अरे गोबरधन भैया...तुम समझते क्यों नहीं ? लोग तुम्हारा फोटू लेंगे...तुम से सवाल पूँछेंगे...अखबार वाले हैं अखबार वाले...।

गोबरधन : तो ये बात है...[अकड़ता हुआ] अरे ओ कमली इधर आना...।

कमली : क्या है ? अब क्या मिल गया ?

गोबरधन : हरिया मुझे फोटू खिचाने के लिए बुलाने आया है—तू भी चलेगी न !

कमली : खूब लगोगे तुम इस बुढ़ापे में...? और तुम्हें फोटू खिचाते हुए शर्म नहीं आती . ?

गोबरधन : तू नाराज क्यों होती है ? हर दुःख-दर्द में अपना हाथ बंटाया है तूने। तेरे बिना मैं फोटू नहीं खिचा सकता हरिया मैं नहीं जाता इसके बिना।

हरिया : पहले तुम दोनों आपस में फैसला कर लो...मैं चलता हूँ अगर इच्छा हो जाये तो आ जाना... [चला जाता है]

कमली : तुम उदास हो गए ? [हाथ पकड़ती है] क्या तुम पर मुझे गुस्सा होने का इतना भी अधिकार नहीं...कि मैं तुम से कुछ कह सकूँ...?

गोबरधन : कमली...? ऐसा मत कहो...। तुम्हारे ही सहारे तो अब तक जीवन बीता आया। मैं कैसे भूल सकता हूँ वे दिन...जब भी मैं थका-हारा ठाकुर साहब से अपमानित होकर घर लौटता तो तुम्हारे ही पास आकर जिन्दा होता था। याद है कमली...। मुझे सब कुछ याद है...किस-किस तरह हम जीवन काटते आये हैं।

\+ \+ \+ \+

ठाकुर की चौपाल

ठाकुर : [वह आँख बन्द करके राम राम जपने लगता है। गोबरधन हाथ जोड़कर "पाँव लागी, मालिक" कहता है। वह आँखें खोल कर देखता है] आ गए नवाब साहब, हरामी कहीं के यह कोई समय है, हल जोतने का। साले जवानी चढ़ी है...सब खतम हो जायेगी...।

गोबरधन : जरा देर हो गयी, मालिक। रात को खेत में देर तक काम करता रहा इसलिये देर तक...।

ठाकुर : अबे दांत क्या खिसोड़ता है। हल वहाँ रखा है। देवी स्थान के पास वाली जमीन पर चला जा। बैल ले गया है.... [गोबरधन चला जाता है] सुरेन्दर ओ सुरेन्दर...।

लड़का : क्या बात है बाबूजी ?

ठाकुर : देख लो...गोबरधन देर से आया है। उसकी मजदूरी से पाव भर काट लेना। बोल देना मां को, देर से आता है...।

लड़का : क्या बाबू जी ? वह आज ही तो देर से आया है...।

ठाकुर : अबे क्यों की औलाद...मैंने जो कहा वो कर...बोल दे मां को... [माला जपने लगता है] [लड़के का प्रस्थान] [क्षण भर बाद गनेसी का प्रवेश]

गनेसी : परनाम मालिक..[ठाकुर अनसुनी कर देता है] परनाम मालिक...।

ठाकुर : [अभिनय करते हुए] कौन है—अरे तुम गनेसी। कब आए ?

गनेसी : मैं तो अभी आया...।

ठाकुर : दरअसल भगवान की भक्ति में ऐसा रम जाता हूँ—कुछ पता ही नहीं चलता।

गनेसी : साथ भी तो यहीं जाता है मालिक...।

ठाकुर : इसीलिए तो, आदमी मुट्ठी बांध कर आता है, हाथ पसारे चला जाता है। कहो कैसे आना हुआ ?

गनेसी : आप तो जानते ही हैं, मालिक हम गरीब आदमी हैं।

ठाकुर : अरे क्या अमीर क्या गरीब—सब बराबर हैं उसके दरबार में। तुम हमें क्या अमीर समझते हो ?

गनेसी : कैसी बात करते हैं मालिक, इस गाँव में आपके सिवा है ही कौन ? आप ही एक हैं जिससे हम लोगों की इज्जत-हुरमत बच जाती है।

ठाकुर : अरे सब भगवान की कृपा है भैया...कहो कितना चाहिए तुम्हें ?

गनेसी : [झेंपता हुआ] ढाई...ढाई...तीन सौ...इसकी तो सख्त जरूरत है...।

ठाकुर : इतने रुपये ? ऐसी भी क्या जरूरत पड़ गयी...।

गनेसी : मेरी घर वाली हमेशा बीमार रहती है सोचता हूँ शहर के किसी अच्छे डाक्टर को दिखला लूँ...।

ठाकुर : तो इसके लिए इतने रुपये की क्या जरूरत है ? अरे वैद्य जी को पकड़ो...। रोगों की पकड़ है इनको।

गनेसी : उन्हीं का इलाज तो चल रहा था। उन्होंने भी जवाब दे दिया कहा, शहर ले जाओ बीमारी गम्भीर है।

ठाकुर : देखो भाई, दो-तीन सौ रुपये तो अभी मेरे पास नहीं हैं। शाम तक हो सकता है।

गनेसी : अगर आप अभी दे देते तो मैं दोपहर को चला जाता।

ठाकुर : लेकिन अभी तो मेरे पास नहीं हैं...।

गनेसी : क्या मुझे आपके दरबार से खाली हाथ लौटना पड़ेगा। काफी उम्मीद लेकर आया था, मालिक...।

ठाकुर : अच्छा ठीक है...मैं सुरेन्दर को भी पूछता हूँ...। लेकिन सूद का भाव मालूम है न ? मैं तीन सौ का छः सौ लिखाऊँगा। जब तुम तीन सौ वापस करोगे, परनोट तुम्हें वापस कर दूँगा...।

गनेसी : लेकिन यह तो बहुत ज्यादा है मालिक...।

ठाकुर : तो फिर सोच लो...अगर तीन सौ ही लिखाना चाहते हो तो अपना अंगूठा देते जाओ।

गनेसी : जो भरिये मालिक—पैसों को देखूँ या जान को—पैसे तो फिर आ जायेंगे लेकिन जान तो वापस नहीं आयेगी...।

ठाकुर : ठीक है ! तो अभी आया। [वह सादे कागज पर अंगूठा लगाने के लिए कागज लाता है। गनेसी के बायें अंगूठे का छाप लेता है और रुपये देता है। गिन लेना दो सौ सोलह रुपये हैं]।

गनेसी : दो सौ सोलह...? [उदास हो जाता है]

ठाकुर : हाँ भैया गनेसी...देखो हम दोनों का प्रेम-भाव अपनी जगह है और रुपये का लेन-देन अपनी जगह। साल भर का ब्याज मैंने

इसी से काट लिया है...साढ़े तीन रुपये सैकड़ा के हिसाब से...।
[गनेसी लम्बी सांस लेकर उठता है। ठाकुर फिर माला जपने लगता है। तभी लड़के का प्रवेश]

: मैं जा रहा हूँ, बाबूजी...दो दिन बाद आऊँगा।
तू मेरी बात नहीं समझेगा, मूर्ख। क्यों तू ऐसे-वैसे काम करता है, तुझे कमी किस चीज की है। मैंने इतना कमा लिया है कि तू तीन पुश्त तक बैठा खाता रहेगा...।

: आप नहीं समझेंगे बाबू जी...अभी गांजे का व्यापार जोर पर है। समझ लीजिए एक के दो मिल जाते हैं। सूदखोरी मुझे अच्छी नहीं लगती।

: गैर कानूनी काम मुझे भी अच्छे नहीं लगते। यह जोखम का काम है बेटा...।

: आप इसकी चिन्ता मत कीजिए बैठकर सूद लीजिए [कहकर चला जाता है। कैमरा केवल जाप करते हुए ठाकुर पर केन्द्रित होता है.]

\+ + + +

गोबरधन का घर

[गोबरधन अपना डंडा एक कोने में रखता है। गमछे में बंधे अनाज को सुमित्रा की ओर बढ़ाता है। कमली कपड़े से सर ढांपते हुए]

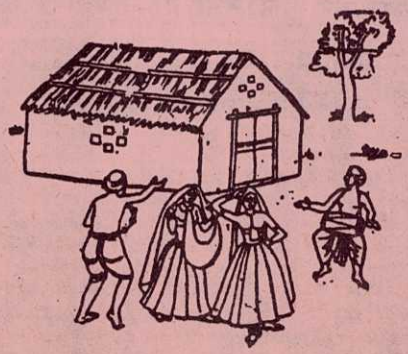

कमली : क्या हुआ ? मुँह लटकाए क्यों हो ?

गोबरधन : और क्या, गरीबों के चेहरे पर हँसी कहाँ से आये ?

[सुमित्रा चली जाती है]

कमली : क्यों ? आज फिर कुछ ठाकुर ने कहा ?

गोबरधन : उस साले के पास कहने को क्या है ? फिर आठ दिनों की मजदूरी काट ली...।

कमली : यह तो ठाकुर का अन्याय है। जिस तरह वह हम गरीबों का खून चूसता है...भगवान एक दिन जरूर इंसाफ करेगा...।

गोबरधन : इसके पहले ही मैं उसका खून कर दूँगा...। क्या समझता है हरामी...

कमली : तुम दूसरी जगह काम क्यों नहीं करते ?

गोबरधन : इस हरामी ने हमें कहीं का नहीं रखा । जब मैं दूसरी जगह काम करने की बात कहता हूँ वह मेरा कागज लौटाने से इन्कार कर देता है।

कमली : कौन सा कागज ?

गोबरधन : वही जिस पर मैंने अपना अंगूठा लगाया है...बेईमान...कहीं के...। मुझे कभी-कभी तो भगवान पर भी गुस्सा आने लगता है...।

कमली : अच्छा गुस्सा बाद में करना अभी कुछ खा-पी लो...।

गोबरधन : आज मैं नहीं जाऊँगा।

कमली : [मुस्करा कर] जानती हूँ तुम्हारा गुस्सा कैसा होता है...? रात में सिर्फ एक क्षण के लिए चढ़ता है...।

[अर्थपूर्ण मुस्कराहट]

\+ + + +

ठाकुर का घर

ठाकुर : जब-जब होई धर्म की हानि, जब-जब बढ़े असुर अभिमानी...। अर्थात काग भुसुण्डि जी ने गरुड़ को समझाते हुए कहा—हे गरुड़ जी, जब इस संसार में अधर्म बढ़ जाता है, असुरों का प्रताप छा जाता है...संत, गौओं पर अत्याचार बढ़ जाता है तो संसार की रक्षा करने के लिए भगवान अवतार लेते हैं।

[गोबरधनमा आता है। उस पर नजर पड़ती है]

क्यों रे गोबरधनमा...तू मेरी निन्दा किये चलता है...। हरामी... जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है...। उल्लू का पट्ठा। गाँव में कौन किसको मजदूरी देता है रे...। सारे गाँव की मजदूरी डेढ़ सेर है और मैं तुम्हें दो सेर देता हूँ...साले उस पर भी तू मेरे खिलाफ बोलता है ?

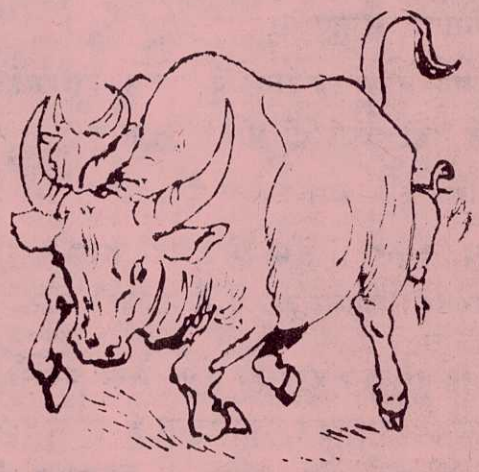

गोबरधन : गलती हो गयी मालिक। असल में सब मजदूर...मजदूरी की मांग करते हैं...।

ठाकुर : जा जा तू...इसके चक्कर में मत आना। जा दो सेर अनाज ले ले मालकिन से...। भुक्त...।

गोबरधन : बहुत अच्छा मालिक. [जाने लगता है]

ठाकुर : अरे सुन कल निमौनी के लिए मजदूरों की जरूरत है। तुम अपनी औरत को भी बोल देना। सेर भर की मजदूरी उसे भी मिल जायेगी...तुमको डेढ़ सेर उसकी सेर भर...।

गोबरधन : बहुत अच्छा मालिक...।

[कुछ गुनगुनाता हुआ गोबरधन आता है उसके साथ गनेसी भी है]

गोबरधन : कमली कहाँ गई। बैठो गनेसी।

सुमित्रा : अभी ठाकुर की हवेली में है। काम करने गयी है। कुछ खाओगे बापू ?

गोबरधन : नहीं अभी कमली को आ जाने दे। कस्तूरी कहाँ गई ?

सुमित्रा : झुमके पहन रही है। [कह कर हँसती हुई भाग जाती है] [दोनों गम्भीर मुद्रा में बैठे हैं]

गोबरधन : मामला तो गम्भीर है। गनेसी...तुम्हें सादे कागज पर अंगूठा नहीं लगाना चाहिए था...।

गनेसी : तुमने भी तो लगाया है। तुम ही क्यों, हर गरीब आदमी जीने को यही करता है गोबर भाई...

गोबरधन : ठाकुर अब क्या कहता है ?

गनेसी : अब कहता है तुम मेरे यहाँ काम करो। कोई मजदूरी तय नहीं करता। कहता है सूद में मजदूरी काट लेंगे ?

गोबरधन : बहुत अन्याय हो रहा है। मेरी कमली भी काम करती है। समझो दिन-रात लगी रहती है तो मजदूरी एक सेर। जब मजदूरी बढ़ाने की बात करता हूँ तो कहता है कि यह औरत-जात का मामला है...।

गनेसी : लेकिन काम तो सब बराबर करते हैं... फिर...

गोबरधन : फिर क्या...जो किस्मत ले के आये हैं, भोग रहे हैं। किस से शिकायत करें सब तो भेड़ की खाल में भेड़िये हैं। मेरा विश्वास इस दुनिया से उठ गया। इतना अधर्म ?

गनेसी : तुम भी ऐसी ही बात करते हो। न जाने क्या हो गया लोगों को...? हर कोई भगवान के भरोसे बैठा है...अन्याय के खिलाफ तो लड़ना ही पड़ेगा...। मैं चलूँ गोबरधन भाई...। लो आ रही है भौजी. [वह तेजी से अन्दर कमरे में चली जाती है। कोने में बैठकर रोने लगती है] अच्छा गोबरधन—मैं चलता हूँ

[गोबरधन उठकर कमरे में आता है]

गोबरधन : क्या हुआ...? क्या हुआ ? कमली !

[वह फूट पड़ती है] कमला कमला ? कुछ बताओ तो...।

कमला : मत छुओ मुझे...। क्या हक है तुझे पति बनने का। एक दिन लोग घर से उठा कर ले जायेंगे और तुम हाथ बांधे खड़े रहोगे...। उनकी ये हिम्मत, होंगे बड़े अपने घर के...। हम गरीब हैं तो क्या हुआ...। आज उन्होंने मुझे चोरी के इल्जाम में बेइज्जत कर दिया...। मैंने उनका गिलास नहीं चुराया। नहीं चुराया।

[गोबरधन चुपचाप उठता है बाहर आकर बैठ जाता है। ढोल बजने की आवाज]

गोबरधन : कमली, मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे खुद हैरत होती है। मैंने इतना कैसे बर्दाशत कर लिया।

कमला : चलो जो भी होता है अच्छा ही होता है अगर तुमने उस दिन कर लिया होता तो आज मेरी क्या हालत होती...। अच्छा चलो खाना खालो।

[दस-बारह साल का एक लड़का आंगन में पढ़ रहा है। वह गोबरधन का बेटा है। सुमित्रा पास बैठी उन किताबों को देख रही है। वह बीच-बीच में अपनी पुस्तक की कविता की पंक्तियां गुनगुना रहा है.]

सुमित्रा : और क्या-क्या कहा मास्टर जी ने...।

नरेश : कहना क्या था। उन्होंने कहा कि अब तुम रोज पढ़ने आना। मेरी सारी किताबें मास्टर जी देंगे।

सुमित्रा : कापियाँ भी ?

नरेश : हाँ हाँ। देखो उन्होंने ये कापियाँ दी हैं।

सुमित्रा : एक पैसा भी नहीं देना पड़ेगा ?

नरेश : नहीं। और मास्टर जी कह रहे हैं कि एक छात्रावास भी बनेगा। गरीब छात्रों के रहने के लिए...।

सुमित्रा : क्या ? [जोर से] मां सुनती हो ? नरेश ने क्या कहा ? अब किताबें खरीदने के लिए पैसे नहीं लगेंगे...। वाह...बापू के बहुत पैसे बचेंगे...

सुमित्रा : क्या सिर्फ तुम्हें ही दिया गया है ?

नरेश : नहीं बहुत सारे लड़कों को...। क्या गरीब मैं हूँ अकेला...?

[हरिया का प्रवेश]

सुमित्रा : माँ – हरिया चाचा आये हैं... [वह चली जाती है]

हरिया : कहो बेटे भुमन लाल—क्या हो रहा है ?

[कजली आती है।]

कमली : जरा सबर तो करो, देवर...।

हरिया : क्या कर रही थी...।

कमली : हर काम मरदों को बताया नहीं जाता। हां तुम सुनाओ...क्या खबर लाये आज...।

हरिया : खबर तो मैं सिर्फ तेरे लिए लाया हूँ। भौजी तुम्हारा दुश्मन सुरेन्द्र ...अरे वो ही ठाकुर का बेटा जो गैर-कानूनी व्यापार करता था, जेल के अन्दर हो गया।

कमली : हे भगवान...मेरा कलेजा शान्त हो गया... सच कहती हूँ देवर जी...उस नासपीटे ने मेरी बेटी को मार डाला। मेरी बेटी तड़प कर रह गयी लेकिन इस पत्थर का दिल नहीं पसीजा...।

हरिया : गरीबों की हाय कभी खाली नहीं जाती भौजी...।

कमली : अच्छा यह खबर कहाँ से मिली तुम्हें ?

हरिया : अरे यह कोई चोरी-चुपके की खबर है। सारा जिला जानता हैं। ठाकुर का तो नक्शा ही बदला हुआ है। उसे सारे मजदूरों के कागज लौटा देने पड़े। अब औरत और मर्द दोनों को बराबर मजदूरी भी देता है। और समय पर देता है। जरा गोबरधन भैया को भेज देना। कुछ काम है...[वह जाता है। वह धीरे-धीरे उठकर खिड़की के पास खड़ी हो जाती है.]

\+ + + +

गोबरधन : [आँगन में खड़ा] अब मैं क्या करूँ ? ठाकुर के बेटे की तरह चोरी-चमारी करूँ क्या...। तुम लोगों का पेट नहीं भरता तो न भरे...।

सुमित्रा : लेकिन आप मुझ पर गुस्सा क्यों हो रहे हैं ?

गोबरधन : तो मैं क्या करूँ ? अब मेरे पास है क्या। किसे गिरवी रखकर रुपये लाऊँ...?

सुमित्रा : लेकिन जीजी को तो कहीं न कहीं दिखलाना ही पड़ेगा कितने निष्ठुर हैं आप...?

गोबरधन : इसे क्या मैं अपनी चमड़ी बेच कर दिखलाऊँ...क्या करूँ बोलो...। सारा गाँव वैद्य जी से दिखलाता है और मैं इसे शहर के डाक्टर से दिखलाऊँ।

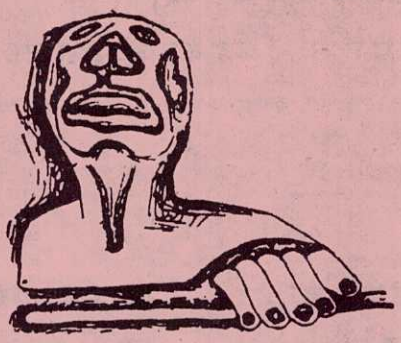

कमली : [कमरे से बाहर आती है] सुमित्रा तू जरा कस्तूरी के पास बैठ। मैं सब सुन रही हूँ। हाँ तुम मुझसे कहो...उस लड़की से क्या कह रहे थे ?

गोबरधन : क्या तुम मुझसे झगड़ा करना चाह रही हो ?

कमली : तुम भागते क्यों हो ? बड़े बाप बने फिरते हो ? इतने बच्चे पैदा करके अब कहाँ जा रहे हो ? अगर बाप बनने की ताकत नहीं थी तो तुम बाप क्यों बने ? दवाई के लिए तरस-तरस कर पहले मेरे दो बच्चे मर गये। अब इस पाली-पोसी लड़की को मैं मरने नहीं दूँगी...। चाहे जैसे भी हो मैं इलाज करवाऊँगी...।

सुमित्रा : माँ जीजी बुला रही है.] वह कस्तूरी के पास जाती है जो बीमार पड़ी है]

कस्तूरी : उन्हें क्यों सुना रही हो माँ...। तुम जानती ही हो वे कुछ नहीं कर सकते...।

कमली : किसको सुनाऊँ बेटी...किसको दोष दूं ? तकदीर को या अपनी करनी को।

कस्तूरी : चुप रहो माँ...मैं ठीक हो जाऊँगी। सर्दी बुखार तो होने की ही चीज है...।

कमली : मेरे सामने बुढ़िया मत बन तू..., चुपचाप पड़ी रह [वह एक संदूक खोलती है। चांदी के कुछ गहने निकालती हुई] इसे रखा था अपनी बेटी की शादी पर खर्च करूँगी...लेकिन क्या करूँ...।

कस्तूरी : माँ--यह क्या कह रही हो...।

कमली : तू चुप रह-[कह कर तेजी से बाहर चली जाती है]

\+ + + +

[ठाकुर का घर। बरामदे की एक कुर्सी पर सुरेन्दर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा है। कमली सहमती हुई धीरे-धीरे आती है]

कमली : छोटे ठाकुर-छोटे ठाकुर ...!

सुरेन्दर : क्या हैं कमली ? क्या बात है ?

कमली : ठाकुर साहब से जरूरी काम है। मुझे रुपये की बहुत जरूरत है...।

सुरेन्दर : लेकिन कमली, हमने तो अब सूद पर रुपया देना बन्द कर दिया है। साला मुनाफा होता ही नहीं। अब तो हम दुगुना मुनाफा कमाते हैं।

कमली : हम आपके यहाँ मजदूरी करते हैं, छोटे ठाकुर कुछ आपका भी तो हक हम पर बनता है ?

सुरेन्दर : हक ? हक किसका क्या बनता है कमली ? अगर समझ है तो माँ खरीद लो-बाप खरीद लो-जोरू खरीद लो...भाई खरीद लो... जो चाहे खरीद लो और रुपये नहीं हैं तो यही सब कुछ बेच दो... रुपये नहीं मिलेंगे।

कमली : हम पर तरस खाओ, छोटे ठाकुर। हमारी बेटी नहीं बचेगी...। उसकी शादी भी ठीक हो गई है छोटे ठाकुर...!

सुरेन्दर : अगर तुम्हारे पास कुछ जेवर तेवर हैं तो हम सोच सकते हैं...।

कमली : ये लो...चाहे जैसे भी हो मेरी बेटी के इलाज के लिए पैसे दे दो।

[गहने निकालती है]

सुरेन्दर : तुम्हारी तो एक और बेटी है, कमली।

कमली : हाँ छोटे ठाकुर...।

सुरेन्दर : तो उसे बंधक क्यों नहीं रख देती। लोग रुपयों के लिए तो अपनी माँ-बहिन तक को बंधक रख देते हैं।

कमली : तूने हमें शहर वाला समझ लिया कमीने...तेरे बाप की हिम्मत है मेरी बेटी को बंधक रखने की ? कमीने तूने दो दिन शहर जा के बाजारी धंधा क्या कर लिया, अपनी माँ.बहिनों की पहचान तक भूल गया। कमीने नहीं चाहिए--नहीं चाहिए तेरे रुपये.. [वह उठके बाल नोचने लगती है तभी ठाकुर बीच बचाव करके अलग करता है]

कमली : आप इसे समझा दीजिए--गरीबों के पास सिर्फ रुपये पैसे नहीं होते, बाकी सब कुछ होता है. [चली जाती है] [ठाकुर अपने बेटे को समझाता हुआ]

ठाकुर : बेटे अभी मैं तेरा बाप हूँ। आज तक तेरी मां को छोड़कर किसी भी दूसरी औरत को भर नजर नहीं देखा... कुत्ते और आदमी में यहीं पर अन्तर होता है...।

\+ + + +

[गोबरधन का घर : गनेसी, हरिया और गोबरधन बैठे हैं]

गनेसी : उन दोनों बाप बेटे में कोई अन्तर नहीं। दोनों आदमी के रूप में राक्षस हैं राक्षस।

हरिया : वो तो है ही गनेसी भैया। लेकिन, अब यह ज्यादा दिनों तक चलने वाला नहीं ... क्यों गोबरधन तुम चुपचाप क्यों हो ?

गोबरधन : मैं क्या बोलूं—भैया। मुझे तो जवान लड़कियों की चिन्ता सताये जा रही है...। गाँव वाले दस तरह की बातें करते हैं। मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता।

गनेसी : मैं तो भैया इसीलिए कहता हूँ शादी मत कर। मेरी तरह कुंआरा रह या बच्चे कम पैदा कर। लेकिन तुम लोग हंस देते हो।

गोबरधन : ठीक - ठीक है—। लेकिन मैं बहुत परेशान हूं...।

हरिया : देख भैया परेशान होने से दुख बढ़ता है। मर्द आदमी हो... घबड़ाओ मत। हम सब लोग साथ हैं तुम्हारे। कस्तूरी को ठीक हो जाने दे। तुम्हारी दोनों लड़कियों की शादी ठीक हो जायेगी।

गनेसी : सुमित्रा की शादी का जिम्मा मैं लेता हूं। बिना दहेज के सुन्दर सा लड़का दूंगा. [सुमित्रा भी दौड़ती आती है]

सुमित्रा . बाबू जी जीजी जाने कैसे कैसे कह रही है. [सभी कमरे की ओर दौड़ते हैं। औरतों के रोने की आवाज धीरे - धीरे कोलाहल में बदल जाती है कमली खिड़की की ओर देख रही है]

\+ \+ \+ \+

कमली : नरेश बेटे बाहर देख तो शोर काहे का है...।

[वह लड़का दौड़ता चला जाता है] सुमित्रा - अरी ओ सुमित्रा कहाँ है ?

सुमित्रा : आती हूँ माँ... [आकर] क्या है ?

कमली : आ मेरे सर की जुएं निकाल।

सुमित्रा : बापू को कह देना एक कंघी ले आये—मैं कितना बैठ बैठ कर रोज निकालती रहूँ... [लड़का दौड़ता हुआ आता है]

नरेश : माँ—माँ—घर बनाने वाले आये हैं। बाबू जी भी साथ हैं।

सुमित्रा : कहाँ ? [वह दौड़ जाती हैं नरेश भी भागता है]

कमली : घोड़ी की तरह दोड़कर कहाँ जाती है। धीरे धीरे नहीं चला जाता ? [वह स्वयं खिड़की पर खड़ी होती है गोबरधन तभी आता है]

गोबरधन : कमली—हमारा ये टूटा हुआ घर भी बदल जायेगा...। सुनती हो ... इसमें बिजली लगेगी...। तुम्हें ढिबरी जलाने की जरूरत नहीं होगी, कमला...। ये लोग मकान बनाने वाले सरकार की तरफ से आए हुए हैं। अरे तुम रो रही हो ? यही तो हमारा सपना था। सर छुपाने के लिए एक घर—हम हों और मेहनत मजदूरी करने के लिए ताकत हो ..।

कमली : मुझे कस्तूरी की याद आ रही है। आज वह जिन्दा होती तो कितना खुश होती...? उसे मकान में बिजली लगना बहुत अच्छा लगता था।

गोबरधन। हमारी सुमित्रा तो खुश है न ? नरेश तो खुश है न...हमने सपने भी तो अपने बच्चे के लिए देखे थे मैं नहीं पढ़ सका तो मेरा नरेश तो विद्वान बन सकेगा । आओ ... तुम भी बाहर चलो...। घर बनाने शहर से कुछ मेम साहब भी आयी हैं...। [खींचकर ले जाने लगता है] चलो न...?

☼☼☼